Date 20.5.20

DII (Hons.), Paper - III

Lecture No- 37

Dr. Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga.

Topic — Concept of Normality and Abnormality

असामान्य मनोविज्ञान असामान्य व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। यह मनोविज्ञान असामान्य व्यवहार के लक्षणों, कारणों तथा निवारक (Preventive) तथा रोगहर (Curative) उपायों का वर्णन करता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जबकि हम सामान्यता (normality) तथा असामान्यता (Abnormality) के Concept से अवगत हों। अतः सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि कौन सामान्य है और कौन असामान्य है। लेकिन यह एक कठिन कार्य है। इसके समाधान के लिये कुछ निश्चित मापदण्डों (Criteria) अथवा मॉडलों के अनुकूल होता है, उसे सामान्य (normal) कहते हैं और जो व्यवहार उन मापदण्डों या मॉडलों के अनुकूल नहीं होता है, उसे असामान्य (abnormal) कहते हैं।

सामान्यता तथा असामान्यता के मापदण्ड
(Criteria or models of normality and Abnormality)

सामान्यता तथा असामान्यता को परिभाषित करने में निम्नलिखित मापदण्डों या मॉडलों का उपयोग किया जाता है :—

1) आत्मगत दृष्टिकोण (Subjective viewpoint) :—

यह दृष्टिकोण बहुत ही प्राचीन है। शुरू में लोग व्यक्तिगत विचार के आधार पर असामान्यता को आँकने की कोशिश करते थे। किसी व्यक्ति का व्यवहार जब निर्णायक के व्यवहार के अनुरूप होता था तब उस

व्यवहार को सामान्य समझा जाता था। इसके विपरीत, जिस व्यक्ति का व्यवहार निर्णायक के व्यवहार के अनुरूप नहीं होता था उस व्यक्ति को असामान्य समझा जाता था और उसके व्यवहार को असामान्य व्यवहार कहा जाता था।

किन्तु यह दृष्टिकोण बहुत दिनों तक मान्य नहीं रह सका, क्योंकि यहां निर्णायक का व्यवहार ही मापदण्ड समझा जाता था। अतः एक ही व्यवहार एक निर्णायक के अनुसार सामान्य और दूसरे के अनुसार असामान्य माना जाता था। इन सब कारणों से विद्वानों ने असामान्यता की व्याख्या में आत्मगत दृष्टिकोण को कोई महत्व नहीं दिया।

2) नैतिक दृष्टिकोण (Ethical Viewpoint) :—

नैतिक दृष्टिकोण के अनुसार जो व्यवहार नैतिक नियमों एवं मूल्यों के अनुरूप होते हैं उन्हें सामान्य माना है। असामान्य कहे जाने वाले व्यक्तियों का व्यवहार धर्म संस्कृति और नैतिक नियमों के अनुरूप नहीं होते। इस प्रकार जो व्यवहार नैतिक होते हैं वह सामान्य तथा अनैतिक कहे जाने वाले असामान्य माने जाते हैं। अब प्रश्न यह है कि नैतिक किस व्यवहार को कहेंगे? एक समाज में एक ही व्यवहार नैतिक और अन्य में अनैतिक हो सकता है। अतः यह दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं है।

3) सामाजिक दृष्टिकोण (Social Viewpoint) :—

प्रत्येक समाज में सामाजिक नियम, प्रथाएं, परम्पराएं, रीति-रिवाज एवं अनेक प्रकार के चलन प्रचलित होते हैं, जो सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। जिस व्यक्ति का व्यवहार समाज के नियमों, प्रथाओं और रीतियों के अनुरूप होता है उसके व्यवहार को सामान्य कहा जाता है और जिसका व्यवहार सामाजिक नियमों से विचलित

होता है, उसे असामान्य कहा जाता है। अतः इस दृष्टिकोण के अनुसार सामान्यता का मापदण्ड सामाजिक नियमों का अनुपालन है। सामाजिक नियम प्रत्येक समाज में अलग-अलग होते हैं, जिसके कारण किसी समाज में सामान्य समझा जाने वाला व्यवहार अन्य समाजों में असामान्य हो सकता है। अतः यह दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं है।

3) सामाजिक दृष्टिकोण (Social viewpoint) :—

प्रत्येक समाज में सामाजिक नियम, प्रथाएं, रीति-रिवाज एवं अनेक प्रकार के चलन प्रचलित होते हैं, जो सदस्यों के व्यवहार को नियमित करते हैं। सामाजिक नियम प्रत्येक समाज में एक दूसरे से अलग होते हैं, जिसके कारण किसी समाज में सामान्य समझा जाने वाला व्यवहार दूसरे समाज में असामान्य हो सकता है। अतः यह दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता है।

4) सांस्कृतिक दृष्टिकोण (Cultural viewpoint) :—

यह दृष्टिकोण उन व्यवहारों को सामान्य समझता है जो संस्कृति के आदर्शों के निकट होते हैं। इसके विपरीत वह व्यवहार जो इन आदर्शों से जितना दूर होता है वह उतना ही असामान्य माना जाता है। व्यक्ति अपनी संस्कृति का दर्पण कहा जाता है। अतः उससे संस्कृति के आदर्शों, मूल्यों और नियमों के अनुरूप होने की अपेक्षा की जाती है। किन्तु संस्कृतियां स्थिर एवं स्थायी न होकर परिवर्तनशील होती हैं। अतः किसी समय सामान्य कहा जानेवाला व्यवहार कालक्रम में असामान्य हो जाता है। अतः यह दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं है।

5) व्याधिकीय दृष्टिकोण (Pathological viewpoint) :—

Brown के इस दृष्टिकोण में मानसिक

स्वास्थ्य को महत्व दिया गया है। मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति सामान्य समझे जाते हैं और वह असामान्य होते हैं जो मानसिक रोगों से ग्रस्त होते हैं। इसके अनुसार अत्यधिक वीरता, अत्यधिक कायरता, अत्यधिक हीनता और श्रेष्ठता, चिन्ता, भय, उत्साह, विषाद के व्यवहार की अभिव्यक्ति को असामान्य व्यवहार कहे जाएंगे। अतः यह दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं प्रतीत होता है।

6) सांख्यिकीय दृष्टिकोण (Statistical Viewpoint) :— इस दृष्टिकोण के अनुसार सामान्य से किसी प्रकार का विचलन असामान्य कहा जाएगा। एक प्रतिभाशाली व्यक्ति भी उतना ही असामान्य कहा जाएगा, जितना मानसिक मन्दन से ग्रस्त व्यक्ति। आज जो कुछ सामान्य है कल वही असामान्य बन सकता है। किन्तु इसमें कुछ सीमाएं भी हैं। इसके अन्तर्गत सामान्यता या असामान्यता का निर्णय किसी गुण के आधार पर लिया जाता है। किसी भी व्यक्ति में सभी गुण औसत मात्रा में नहीं होते। अतः यह निर्णय करना कि कौन व्यक्ति सामान्य है और कौन असामान्य यह बताना सम्भव नहीं है। इसीप्रकार यह भी मान्य नहीं है कि सामान्य और असामान्य में केवल मात्रात्मक अन्तर है। इनमें मात्रात्मक के अलावा गुणात्मक अन्तर भी होता है।

7) मनोगतिकी दृष्टिकोण (Psychodynamic Viewpoint) :— Brown के अनुसार, "असामान्य व्यवहार, सामान्य व्यवहार का अतिरंजीत अथवा विकृत रूप है।"

Brown का उपर्युक्त दृष्टिकोण काफी वैज्ञानिक जान पड़ता है। सामान्य व्यक्तियों का अध्ययन असामान्य व्यक्तियों को समझने में भी सहायक है। क्योंकि इसके अनुसार, असामान्य व्यवहार, सामान्य का ही अतिरंजीत रूप है।

यहीं कहीं इसमें सांख्यिकीय दृष्टिकोण के सभी गुण व्याप्त हैं किन्तु उसके अवगुणों से मुक्त है। ऐसा इसलिए है कि Brown सामान्य-असामान्य में मात्रात्मक अन्तर को स्वीकार करता है। इस दृष्टिकोण की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इसके द्वारा असामान्य, सामान्य और प्रतिभाशाली व्यक्तियों को एक ही नियम के अनुसार समझा जा सकता है क्योंकि उसके अनुसार इनमें मात्रा का अन्तर है प्रकार का नहीं।

परन्तु इस दृष्टिकोण को भी मानव के असामान्य व्यवहार की मुख्य कसौटी नहीं कह सकते। यह मनोरोग के दैहिक पक्ष से सम्बद्ध है। इसके अतिरिक्त व्याधिकीय (Pathological) दृष्टिकोण का समर्थन अब भी प्रबल एवं व्यापक है।

इन सभी दृष्टिकोणों के अपने-अपने गुण-दोष हैं। इनका उपयोग विभिन्न प्रकार की मनोविकृतियों के स्वरूप एवं प्रकार पर निर्भर करता है। किसी एक चर्चित दृष्टिकोण के द्वारा सभी प्रकार की मनोविकृतियों की समुचित एवं वैध व्याख्या सम्भव नहीं है। कोई दृष्टिकोण एक मनोविकृति की सफल व्याख्या करता है तो कोई अन्य मनोविकृति की।

—— X ——

कुमारी कविता
मनोविज्ञान विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा